आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2494 • उदयपुर, रविवार 24 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

स्थापना दिवस सप्ताह - 6 वां दिन

बोरीवली (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 19 अक्टूबर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के बोरीवली (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई द्वारा राजस्थान भवन, जामली गली, बोरिवली (वेस्ट) में आयोजित शिविर में 82 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग 33 तथा 49 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री गोपाल जी शेट्टी (सांसद महोदय उत्तरीपूर्व, बोरीवली), अध्यक्षता श्री सुनिल जी राणे (विधायक महोदय बोरीवली), विशिष्ट अतिथि श्री प्रवीण जी शाह (नगर सेवक, बोरीवली), श्री योगेश जी लखानी (मैनेजिंग डायरेक्टर, ब्राईट ग्रुप), श्री यतीन जी मागिया, श्री संजय जी सेमलानी (सहयोग सेवा ग्रुप) कृपा करके पधारे। शिविर में श्री कमलचंद जी लोढ़ा (मुम्बई शाखा,संयोजक) शिविर में श्रीनाथुसिंहजी,श्री प्रकाश मेघवाल,(टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्रीमुकेश जी सेन, श्रीआंनद जी, श्री महेन्द्र जी जाटव मुम्बई आश्रम, श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर),श्री मुकेश त्रिपाठी रजिस्ट्रेन ने भी सेवायें दीं।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पाँव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गाँव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गाँव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पाँव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुँचे। जहाँ उनके दोनों कटे पाँव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं कि अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूँ और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

खाजूवाला (बीकानेर) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर को नारायण सेवा संस्थान के खाजूवाला, जिला बीकानेर आश्रम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता विश्व हिन्दू परिषद् शाखा बीकानेर रही। शिविर में 218 दिव्यांग भाई–बहिनों की ओपीडी हुई, 37 का ऑपरेशन चयन, 20 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 25 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् भोजराज जी लेखाना, अध्यक्ष श्री भागीरथ जी ज्याबी, विशिष्ट अतिथि श्रीचेतराम जी, श्रीरामधन जी विश्नोई, श्रीफूलदास स्वामी जी, श्रीराजाराम जी जाखड (संस्थान संयोजक), श्रीमती मधू जी शर्मा, श्रीराजकुमार जी ढ़ोलिया, श्रीश्यामलाल जी जांगिड, श्री अजय जी कृपा करके पधारे। शिविर में डॉ. एस.एल. गुप्ता जी, मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी) व भंवरसिंह जी ने सेवायें दीं।

आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान में सेवा की एक अनूठी मिसाल

नाम – तैय्यबा नूरी , पिता शमशुद्दीन अजमेरी। बिहार निवासी तैय्यबा नूरी की माँ ने बताया की वो जन्म से ही कमजोर थी और 5 –6 साल की उम्र से उसके पैरो में तकलीफ होने लगी और धीरे धीरे उम्र के बढ़ने के साथ साथ उसका पैर टेढ़ा होना लगा। तैय्यबा जब स्कूल जाती थी तो उसके साथ वाले उसे लंगड़ी–लंगड़ी कह कह कर चिढ़ाते थे, इस वजह से उसका मन पढाई में भी नहीं लग पाता था।

तैय्यबा के माता पिता ने अपनी आर्थिक विपदाओं के होते हुए भी काफी इलाज कराया, पर कोई फायदा नहीं हुआ। जब उन्हें कहीं से नारायण सेवा संस्थान के बारे में पता चला वो बिना समय गवाएँ यहाँ पहुँचे और यहाँ उनका आधुनिक तकनीक से ऑपरेशन किया गया। तैय्यबा का पैर अभी सीधा हो गया है और अब वो बहुत खुश है कि कोई उसे लंगड़ी–लंगड़ी कह कर नहीं चिढ़ाएगा।

कैलाश जी मानव की अपील

मानवता का संसार में एक ईंट आपकी ओर से भी लगे श्रीमान्

पिछले 34 वर्षों में आपके अपने संस्थान में 4 लाख 25 हजार से अधिक निःशक्त रोगियों का सफल ऑपरेशन कर उन्हें शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाया है, लेकिन अब भी दिव्यांगता से ग्रस्त रोगी बड़ी सँख्या में आ रहे हैं। जिसकी वजह से प्रतीक्षारत रोगियों की सँख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। संसाधनों और स्थान की वृद्धि करने तथा प्रतीक्षारत रोगियों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से वर्ल्ड ऑफ ह्यूमेनिटी (मानवता का संसार) नामक अति आधुनिक हॉस्पिटल का निर्माण किया जा रहा है। 2 लाख 44 हजार वर्गफीट में बनने वाली 7 मंजिला इस इमारत में 450 बेड़, ऑपरेशन थियेटर, आईसीयु, अत्याधुनिक लेबोरेट्री, डिजिटल एक्स–रे एवं भारत की प्रथम विश्वस्तरीय कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला संचालित होगी। साथ ही इस भवन में शारीरिक व मानसिक अक्षमता के रोगी भाई– बहनों को रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए 20 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विशाल सीपी पार्क, 1 हजार से अधिक निःशक्त रोगी एवं परिचारकों के आवास एवं भोजन की अति उत्तम सुविधा, विशाल प्रार्थना हॉल, दिव्यांगों के हुनर को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने के उद्देश्य से ऑडिटोरियम का निर्माण किया जाएगा। इस ग्रीन बिल्डिंग में पर्यावरण के

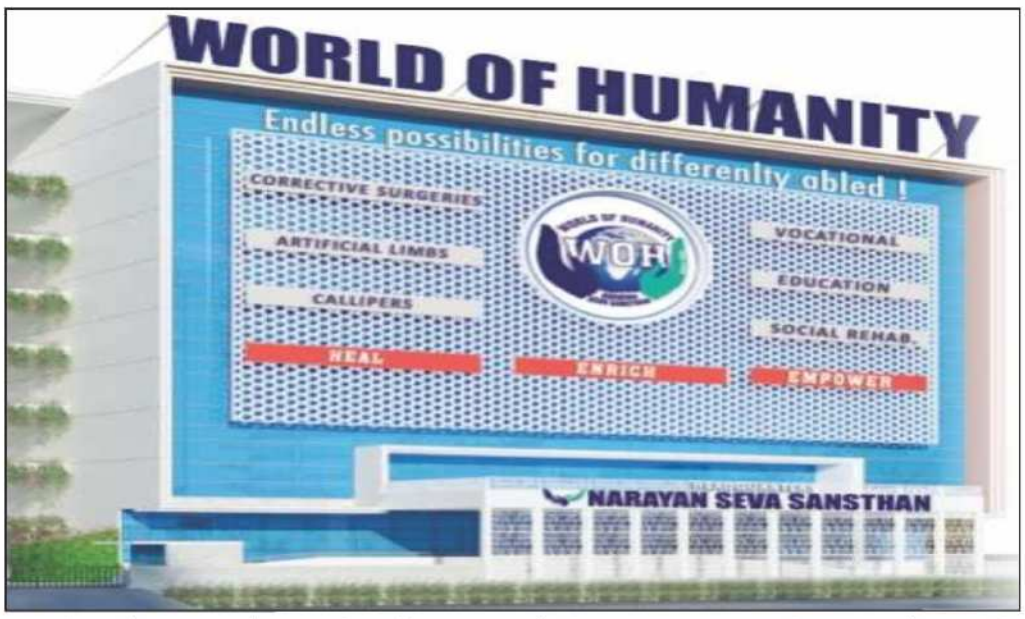

मानकों को ध्यान में रखते हुये जल संरक्षण हेतु वाटर हार्वेस्टिंग, वाटर ट्रीटमेंट प्लान्ट, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लान्ट, सौर ऊर्जा संयंत्र आदि स्थापित होंगे।

दया एवं करुणा से ओत– प्रोत सहृदयी आप सभी दानवीरों से प्रार्थना है कि इस पावन पुनीत यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य दें। सेवा के इस मन्दिर को बनाने में एक– एक ईंट आपकी ओर से भी लगे, ऐसी विनम्र प्रार्थना है। कृपया इस शुभ निर्माण कार्य में साथ जुड़ें।

भारत में संचालित संस्थान शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

श्री मनोज कुमार मेहता,
मो.-09468901402
मकान नं. 5डी-64, हाउसिंग बोर्ड जोधपुर रोड के पास, पानी की टंकी, पाली

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
09829769960 C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001

चुरू
श्री गोरधन शर्मा,09588913301,गाँव व पो.-झोथड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,08989609714, बखतगढ, त.-बदनावर,जि.-धार (म.प्र.)

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा, 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़,झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,09829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161, जामलीधाम,
पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

मध्य प्रदेश

उज्जैन
श्री गुलाब सिंह चौहान
मो. 09981738805, गाँव एवं
पो. इन्गोरिया, उज्जैन 456222

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344,
काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी,माढ़ोताल, जिला - जबलपुर

मन्दसौर
श्री मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9753810864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6, ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा, जिला - मन्दसौर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136, ए-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

सिरसा
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा

जुलाना मण्डी
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108 अनाज मण्डी, जुलाना,जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी,
सेक्टर-14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657, कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
श्री सतीश शर्मा,मो. 09416121278
म.नं. 886, सेक्टर-7, अरबन एस्टेट करनाल

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट, अम्बाला केन्ट-133001

कैथल
श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014
165-हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
नरवाना, जीन्द

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला - नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2
क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग

धनबाद
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापो खुर्द,पो.-गोसाई बलिया,जिला-हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

डोडा
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कोतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
ग्वाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा

उत्तर प्रदेश

मथुरा
श्री दिलीप जी वर्मा,मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा

बरैली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला-बरैली

श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरैली

भदोही
श्री अनूप कुमार बरनवाल,
मो.7668765141,शिव मन्दिर के पास, मैन मार्केट, खमरिया,
जिला भदोही, 221306

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला-कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक
बालोद, जिला-बालोद

ईस्ट दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

सम्पादकीय

व्यक्ति जब तक जीता है तब तक वह सूचनाएँ, जानकारियाँ या किसी के व्यक्त विचारों की बारीकियाँ एकत्र करता रहता है। धीरे– धीरे उसके पास इतनी जानकारियाँ इकट्ठी हो जाती है कि वो स्वयं को ज्ञानी समझने लगता है। इसके बाद उसका स्वयं का मार्ग तो खो जाता है और वह दूसरों के विचारों से अपना जीवन संचालित करने लगता है। यही मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना है। ईश्वर ने हरेक व्यक्ति में भगवत्ता स्थापित कर रखी है। और जन्म के साथ ही कर रखी है। दुर्भाग्यवश हम अपने भीतर के खजाने की उपेक्षा कर बाह्य ज्ञान, विचार व बाह्य अनुभवों से परमात्मा की यात्रा प्रारंभ करते हैं। प्रभु ने जो रचना की थी उसको नजर अंदाज करके हमने अपनी शैली को विकसित कर लिया तो कल्याण कैसे संभव है ? बाहरी वस्तु चाहे वह कितनी भी श्रेष्ठ हो भौतिक ही तो है। अतः हम अपने भीतर उतरेंगे तो पायेंगे कि ईश्वरीय गुणों से हम भरे हुए हैं। उन्हें जागृत करके कैसे ईश्वर के प्रमुख कार्य प्राणिमात्र के लिए कल्याण हेतु जी सकें। यह विचारणीय भी है तथा हमारे लिए करणीय भी।

कुछ काव्यमय

संगम की सिकता पर बनते,
है प्रेरित अनगिन चरणों से
गतिमय जीवन का संदेश।
हो जाता है क्षणिक, अंशतः
पट पर भ्रमणशील मानव भी
देव, ऋषि या फिर दरवेश।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

भ्रातृत्व भाव

भरत जी के मन में बार–बार ये है और वशिष्ठ जी ने भी ये कहा– आपके पिताजी आपको राज्य देकर गये हैं। ये राजसिंहासन खाली नहीं रहना चाहिये। आईये शुभ मुहूर्त में बिराजिये। भरत जी रो पडे, भरत जी ने हाथ जोड़कर कहा– गुरूदेव, आप तो हमारे परमात्मा के समान है। मेरे पिताजी भी नहीं रहे। आप तो गुरू भी हो, पिता भी हो। आपके वचन सिरमाथे चढ़ाना चाहिये। लेकिन क्या करूँ? मेरे से रहा नहीं जाता। मैं तो प्रभु राम जी को मनाने के लिये जाना चाहता हूँ। चित्रकूट जाना चाहता हूँ, आप आज्ञा प्रदान कीजिये।

शत्रुधन जी ने कहा– बहुत अच्छा विचार है– भैया। अब रामजी को, सीताजी को, लक्ष्मणजी को मना के ले आऐंगे। संगबपुर से जब जा रहे थे पहले निशादराज को शंका हो गयी। ये शंका, ये मन में अविश्वास होना। सोचा– अरे! भरत जी तो देखो, इतनी प्रजा भी आ रही है, इतने घोड़े भी आ रहे है, रथ भी आ रहे हैं। रामजी को तो वनवास दिया और एक बार कपट करके राज्य भरत को मिले। राम को वनवास मिले, उनको वनवास दे दिया। अब चित्रकूट में रह रहे हैं। फिर भी भरत उन पर आक्रमण करने के लिये जा रहे हैं। नावों को बांध दो। कोई नाव को खुली ना रखें। भरत जी को गंगापार नहीं उतरने देंगे। उस समय एक सयाने ने कहा–

बिना विचारे जो करे,
सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणो,
जग में होत हंसाय।।

एक सयाने ने कहा– पहले कुछ दूतों को भेज दीजिये– निशादराज जी। मुझे लगता है भरतजी मनाने जा रहें हैं। और जो दूतों को भेजा, भरतजी विह्वल हो गये। आपने मेरे रामजी को देखा है क्या? आपने मेरे रामजी को

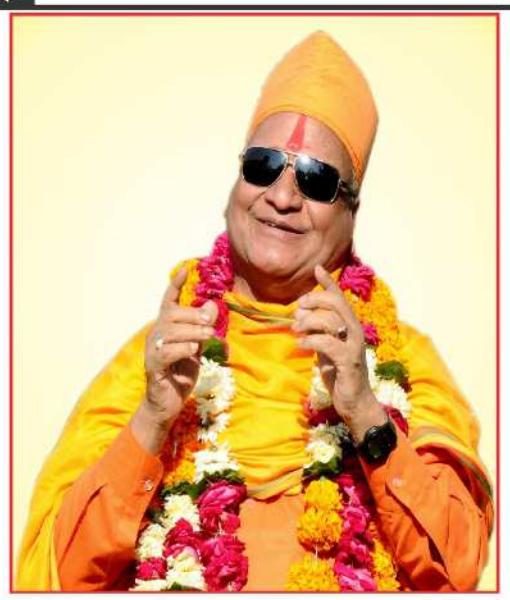

इधर से जाते हुए देखा है क्या? टपटप आँसू टपक पडे। निशादराज ने गले लगा लिया। भरतजी ने कहा– भाई धन्य हो निशादराज। आपने रामजी की सेवा की है। धन्य है निशादराज, इसी वृक्ष के नीचे रामजी सोये हैं। लक्ष्मणजी के साथ आपका लक्ष्मण गीता का संवाद हुआ हैं, सत्संग हुआ हैं। आगे बढते हैं।

सुनो जमीन, सुनो आसमां....।
कौन दिशा में गये मेरे भगवान।।

धरती माता बता दो, मेरे राम कैसे मिलेंगे? मेरे लक्ष्मण भैया को कब कंठ से लगा पाऊंगा? कब सीतामाताजी के चरणों में नमन कर पाऊगाँ? बढ़ रहे है आगे। कौशल्या माता ने कहा– बेटा, रथ में बैठ जा। भरत की आँखों में आँसू आ गये।

सिर बल जाउ उचित अस मोरा....
सेवा धरम परम कठोरा।

लक्ष्मण जी ने दूर से देखा। अयोध्या के लोग आ रहे हैं। हाथी–घोड़े आ रहे हैं, रथ आ रहे हैं। भरतजी आ रहे हैं, शत्रुधन जी भी आ रहे हैं। सोचा– भरतजी के मन में कुछ कुटिलता आ गयी है लगता है। यहाँ भी हमें भगाने के लिये आ रहे है। बोले– राम भगवान आपकी सौगन्ध है। मैं तीर से सबका काम समाप्त कर दूंगा। रामजी ने कहा– नहीं लक्ष्मण नहीं। भरत प्रेम से आ रहा हैं। भरत, शत्रुधन प्रेम से आ रहे है। माताए हमें बुलाने के लिये आ रहीं हैं। गुरूदेव वशिष्ठ जी हमें आमन्त्रित करने के लिये आ रहें हैं। दूर से भरत ने देखा, राम भगवान खड़े हैं। तापस का वेश है। धनुष बाण हाथ में है। प्रेम से मुस्करा रहें हैं। दौड़ पड़े भरतजी, दौड़ पड़े। दण्डवत दौड़ पड़े और रामजी के चरणों में गिर पड़े। रामजी ने उनको गले से लगा लिया। लक्ष्मणजी की आँखों में आँसू आ गये। शत्रुधनजी ने प्रणाम किया।

उसके आशय की
आह मिलेगी किसको।
जन कर जननी ही
जानन न पायी जिसको।।

–कैलाश 'मानव'

माँ का चश्मा

यह कहानी है श्रवण कुमार नाम के एक बालक की। उसका अपनी मां के प्रति अगाध स्नेह था। एक दिन वह अपनी कक्षा में बैठा पढ़ाई कर रहा था। बाहर बारिश हो रही थी। कक्षा में पढ़ाते – पढ़ाते , अध्यापिका ने सभी विद्यार्थियों से पूछा – अगर मैं तुम सभी को सौ – सौ रूपए दूं तो तुम क्या – क्या लाओंगे?

प्रश्न सुनकर सभी विद्यार्थी खुशी से झूम उठे और अपनी – अपनी पसंद बताने लगे। किसी ने कहा – मैं वीडियो गेम लाऊँगा किसी ने क्रिकेट का बैट तो किसी ने प्यारी सी गुडिया। किसी ने बहुत सारी टॉफियाँ तो किसी ने कुछ, किसी ने कुछ इस तरह नाना प्रकार की इच्छाएं विद्यार्थी बताने लगे।

इन सभी के बीच एक बालक शांत और कुछ सोचने में व्यस्त था। अध्यापिका ने उससे पूछा – तुम क्या सोच रहे हो ? तुम क्या खरीदोगे ?

इस पर बालक ने बहुत ही भोलेपन से उत्तर दिया मैड़म जी, मेरी माँ को थोड़ा कम दिखता है। अतः मैं अपनी मां के लिए एक चश्मा खरीदूंगा। इस पर अध्यापिका ने कहा–तुम्हारी मां के लिए चश्मा तो तुम्हारे पिताजी भी खरीद सकते हैं। क्या तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं खरीदना है ? अध्यापिका की बात सुनकर बालक रूँआसा हो गया दबी आवाज में बोला – मेरे पिता जी अब इस दुनिया में नहीं है। मेरी मां लोगों के कपड़े धोकर भी कर मुझे बड़ी मुश्किल से पढ़ाती हैं। बालक का जवाब सुनकर अध्यापिका निरूतर हो गई और बच्चें को गले से लगा लिया।

– सेवक प्रशान्त भैया

छिटकी जिन्दगी को लगे पंख

रोहित अहिरवार (25) मंडीदीप (भोपाल) में एक आर. ओ. प्लांट में करते हुए माता–पिता सहित 7 सदस्यों के परिवार में जीवन निर्वाह कर रहा था। 4 बहनों में दो का विवाह हो चुका था, जबकि दो की शादी शेष है। माता– पिता रामवती देवी–भैयालाल अहिरवार दोनो ही वृद्ध हैं। पिता परिवार पोषण में मदद के लिए मजदूरी करते हैं। गृहस्थी की गाड़ी ठीक से आगे बढ़ रही थी कि अचानक एक हादसे ने पूरे परिवार को अस्त–व्यस्त कर दिया। फरवरी 2020 की पहली तारीख को रोहित भैरोपुर स्थित घर से मंडीदीप जाने के लिए निकला। भोपाल से मंडीदीप जाने वाले निकटवर्ती स्टेशन पर पहुंचा और प्लेटफॉर्म के निकट खड़ा था। ट्रेन आने में कुछ ही मिनट शेष थे। तभी कोई व्यक्ति दौड़ता हुआ उसके पास से गुजरा और रोहित उसके धक्के से रेलवे ट्रेक पर जा गिरा। संयोगवश तभी ट्रेन धड़धड़ाते हुए आ पहुंची और उसके दोनों पांवों को चपेट में लेते हुए आगे बढ़ गई दोनों पांव कट चुके थे। उसे तत्काल भोपाल के एक अस्पताल ले जाया गया जहां उसका इलाज चला। दोनों पांव कटने से परिवार पर संकट के बादल छा गए। परिवार आर्थिक संकट का सामना करने लगा। किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह भी दी लेकिन आर्थिक संकट के चलते रोहित के लिए यह नामुमकिन था। ठीक एक साल बाद भोपाल में 22 जनवरी2021 को नारायण सेवा संस्थान की कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगा। प्रचार–प्रसार से रोहित को पता लगने पर वे भी शिविर में पहुंचे, जहां घुटनों से ऊपर तक कृत्रिम पांव बनाकर लगाए गए। रोहित अब चलते है और जल्दी ही उन्हें काम पर लौटने की उम्मीद हैं।

कोरोना से रिकवर लोगों के लिये

आयुर्वेद के अनुसार रोगों को ठीक होने में मरीज की दिनचर्या, आहार–विहार और व्यवहार भी महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में कोरोना से रिकवर हुए लोगों के लिए आयुर्वेद की महत्ता बढ़ जाती है। जानते है पोस्ट कोविड में आयुर्वेद कैसे मदद करता है ?

स्वाद का पता न लगना –कोरोना में डेमेज हुई नर्व के रिजनरेट होने में कई बार छह माह तक समय लग जाता है। तीखी चीजें लहसून आदि सूंघे। तनाव न लें, धैर्य रखें। साथ ही चिकित्सक की सलाह से अश्वगंधारिष्ट ले सकते हैं।

कमजोर पाचन शक्ति –हल्का भोजन करें। ओवर ईटिंग न करें। पोषक तत्वों से भरपूर ताजा खाना खाएं। हरी सब्जियां, दालें, अनाज आदि लें। फलों को खाने के साथ न खाएं। रोगी अपने शरीर के प्र.ति के अनुसार ही भोजन करेगा तो जल्द आराम मिलेगा।

जिन्हें पहले से कोई बीमारी –बीमारी के अनुसार डाइट चार्ट बनाएं। क्रॉनिक डिजीज में आयुर्वेदिक उपचार लेने से पहले डॉक्टर से परामर्श लें और साथ कुछ समय तक ऐलापॉथी दवा भी साथ लें। आयुर्वेद का प्रभाव मिलने पर धीरे–धीरे अन्य दवा बंद की जा सकती है।

ओवर एक्टिविटी सही नहीं –कोविड से रिकवरी होने के बाद जरूरी नहीं कि आप अपनी दिनचर्या में लौटने के लिए क्षमता से ज्यादा काम करें या तनाव लें। इससे रिकवरी से दौरान कई अंगों की रिपेयरिंग सही से नहीं होगी।

इम्युनिटी न घटने दें –पोस्ट कोविड की स्थिति में लोगों को लगता है कि हम ठीक हो गए हैं और ठंडी व बासी चीजें, तली–भुनी व मसालेदार चीजें खाने लगते हैं। इनसे इम्युनिटी घटती है।

4 उपयोगी बातें –दिनचर्या में इन मुख्य बातों पर गौर कर सेहतमंद रह सकते हैं।

वॉक करें– शरीर में सूक्ष्म स्तर पर रिपेयरिंग करने के लिए वॉकिंग अच्छा विकल्प है। दिनचर्या में वॉक का समय धीरे–धीरे बढ़ाएं। जरूरत से ज्यादा वॉक न करें।

सांस रोकने की क्षमता– फेफड़ों की क्षमता को बढ़ाने के लिए थोड़ी–थोड़ी देर में 10–15 सेकंड के लिए सांस को रोकने का अभ्यास करें। 30–40 सेकंड भी सांस रोकना सेहतमंद होता है।

गुडुची है लाभदायक– शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने और पोस्ट कोविड के बाद कमजोर हुए अंगों को ताकत देने में मददगार हो सकती है गुडुची व गिलोय डॉक्टरी सलाह से लें।

पर्याप्त नींद जरूरी– पोस्ट कोविड की स्थिति में शरीर के विभिन्न अंगों को भी रिकवरी का समय मिलना चाहिए। इसके लिए पर्याप्त आराम यानी नींद जरूर लें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023